गीता के सिद्धान्त–

मोक्ष–गीता के अनुसार जीवन का परम पुरुषार्थ मोक्ष अथवा भगवत् प्राप्ति है। मोक्ष प्राप्ति के लिए तीन साधन हैं–कर्म योग, ज्ञान योग, भक्तियोग।

१. कर्मयोग–श्रीकृष्ण अर्जुन को कहते हैं कि मनुष्य का स्वभाव त्रिगुणात्मक है वह सत्त्व–रजस्–तमस् से निर्मित है। अत: मनुष्य कर्म का त्याग नहीं कर सकता। मनुष्य को फल की इच्छा का परित्याग करके कर्म को कर्तव्य समझकर करना चाहिए। मनुष्य को निष्काम कर्म करने से कर्मबन्धन नहीं होता। निष्काम भाव से कर्म

करने से आत्मशुद्धि होती है। तथा आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है। अत: निष्काम करने वाला व्यक्ति ज्ञानवान होता है, ज्ञानी पुरुष भक्त भी होता है। अत: कर्तव्य की चेतना से अभिप्रेरित होकर कर्म करते रहना चाहिए।

२. **भक्तियोग**—भक्ति का तात्पर्य है भगवान के स्वरूप को जानना, भगवान का निरन्तर स्मरण करते रहना, अपने कर्मों को भगवान को अर्पित कर देना। भक्ति की गहनावस्था प्रपत्ति कहलाती है। प्रपत्ति में भक्त अपने आपको पूर्ण रूपेण ईश्वर को समर्पित हो जाता है। श्रीकृष्ण अर्जुन को कहते हैं कि मेरे लिए ही कर्म करने वाला आसक्ति रहित, सभी प्राणियों में वैरभाव रहित मेरा भक्त मुझे ही प्राप्त होता है। इसलिए मुझसे ही अपने को लगाकर और ममपरायण होकर मुझको ही प्राप्त करो। मेरा आश्रय लेने वाला मनुष्य कर्मों को करता हुआ भी मेरे अनुग्रह से शाश्वत पद प्राप्त करता है। इस प्रकार अनन्य भाव से ईश्वर की भक्ति करने वाला पुरुष परमपद को (मोक्ष) प्राप्त कर लेता है। भक्त के कर्म ईश्वर का अनुष्ठान है। अत: भक्त कर्मयोगी होता है। भक्त की आत्मा शुद्ध होती है। शुद्धात्मा वाला पुरुष तत्त्वज्ञानी होता है।

३. ज्ञानयोग—ज्ञान का महत्व बताते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं कि ज्ञान से बढ़कर पवित्र करने वाला कुछ भी नहीं है। ज्ञानाग्नि सभी कर्मों को भस्मसात् कर देती है। ज्ञान का तात्पर्य तत्त्वज्ञान से है जोकि ईश्वर के स्वरूप ज्ञान तथा जीव को ईश्वर के अंश के रूप में जानना एवं पहचानना है।

भक्तो में ज्ञानी भगवान को अत्यन्तप्रिय है। ज्ञानी पुरुष कर्म का परित्याग नहीं करता। गीता में कहा गया है कि ज्ञान मार्ग एवं कर्ममार्ग को अज्ञानी (बालक) ही भिन्न समझते हैं। किसी एक योग में भी स्थित पुरुष अन्य दोनों का लाभ प्राप्त करता है।

स्वधर्म—गीता में स्वधर्म के विषय में कहा गया है —"स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मोभयावह।" इसका तात्पर्य वर्णाश्रम धर्म से है। चारों वर्णों की सृष्टि ईश्वर द्वारा की गयी है। अतः स्वधर्म का पालन न करना ईश्वर के आदेश को न मानना है। जो व्यक्ति कर्तव्य भावना से प्रेरित होकर स्वधर्म का पालन करता है। वह कर्म योगी है वह मोक्ष प्राप्त करता है। श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि तुम क्षत्रिय हो, अतः युद्ध करना तुम्हारा धर्म है। अतः—

सुखदुःखेसमेकृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि।।

स्थित प्रज्ञ—जब मनुष्य अपने मन में स्थित सभी इच्छाओं को त्याग देता है तथा आत्मा से ही आत्मा में सन्तुष्ट रहता है तो उसे स्थित प्रज्ञ कहते हैं। वह जीवन्मुक्त होता है। वह सभी प्राणियों का मित्र, अद्वेष्टा करूणापरायण, ममता तथा अहंकार रहित, दुःख-सुख को समान मानने वाला तथा क्षमाशील होता है। वह हर्ष

6 PRO
MERA

द्वेष के वशीभूत नहीं होता वह शोकरहित एवं आकांक्षाहीन होता है। वह शुभाशुभ फल का परित्याग करने वाला होता है।

भक्त—गीता में भक्त चार प्रकार के बताये गये हैं—

१. **अर्थार्थी**—लाभ की इच्छा से ईश्वर स्मरण करने वाला।

२. **आर्त**—दुःख निवारण के लिए ईश्वर स्मरण करने वाला।

३. **जिज्ञासु**--भगवान के स्वरूप को जानने के लिए भजन करने वाला।

४. **ज्ञानी**—भगवान के स्वरूप को जानकर उसका चिन्तन करने वाला।

भक्ति—गीता में भक्ति दो प्रकार की बतलायी गयी है—

१. **पराभक्ति**—जब भक्त भक्ति के अतिरिक्त कुछ अन्य नहीं चाहता।

२. **अपराभक्ति**—जो भक्ति साधन के रूप में फल प्राप्ति की इच्छा से की जाती है।

पुराणानां नामानि तत्प्रमाणं च

पुराणानां संख्याविषये मतभेदो नास्ति, सर्वाविदिसिद्धं तेषामष्टादशत्वम् ।

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम् ।
अनापर्लिगकूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते ॥'

श्लोकोऽयं पुराणानां नामानि संगृह्णाति ।

मद्वयम्—मकारादिपुराणद्वयम्-मत्स्यपुराणम् मार्कण्डेयपुराणञ्च २
भद्वयम्—भकारादिपुराणद्वयम्—भविष्यपुराणम् भागवंतपुराणञ्च ४

ब्रत्रयम्—ब्रादिपुराणत्रयम्—ब्रह्माण्डपुराणम्, ब्राह्मपुराणम्, ब्रह्मवैवर्त्तञ्च
वचतुष्टयम्—वकारादिपुराणचतुष्टयम्—वामन-वराह-विष्णु-वायुपुराणानि

अ—अग्निपुराणम्—

ना—नारदपुराणम्—

प—पद्मपुराणम्—

लिं—लिङ्गपुराणम्—

ग—गरुडपुराणम्—

कू—कूर्मपुराणम्—

स्क—स्कन्दपुराणम्—

पुराणानि

पुराणानां धार्मिकदृष्ट्या महत्वमधिकम्। वेदविहितानां धर्माणां सरल-सुबोधभाषायां वर्णनायैव पुराणानि विरचितानि—

'इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।
बिभेत्यल्पश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यति॥'

यदा वेदोक्ता अर्थाः लोकानां बुद्धौ नारोढुं प्रवृत्तास्तदा वेदोक्तार्थस्य ज्ञानं सुलभं कर्त्तुं पुराणानि विरच्यन्ते स्म।

समाजस्य तात्कालिकस्वरूपबोधनायापि पुराणानां महानुपयोगः पुराणेषु प्राचीनभारतस्येतिहासो निहितः। पुराणोक्तानामितिवृत्तानां प्रामाणिकत्वं शिलालेखादिभिरपि कर्त्तुमारब्धम्, अतो विदेशीया अपि विद्वांसः पुराणे धृतादराः प्रतिभान्ति।

इतिहासा यदि राज्ञां वृत्तं प्राधान्येन बोधयन्ति तदा पुराणानि राज्ञां वृत्तैः सह ऋषीणामपि वृत्तं बोधयन्तीति परमोपयोगित्वं पुराणानाम्।

पुराणानि भोगोलिकसामग्रीमपि प्रस्तुवन्ति। काशीखण्डे काशीपुर्यास्तादृशं विस्तृतं वर्णनं विद्यते येन तस्या मानचित्रमिव पुरत उपतिष्ठते। अन्येष्वपि पुराणेषु तेषां तेषां तीर्थानां तादृशं स्पष्टं वर्णनमुपलभ्यते, येन तत्परिचये सौकर्यमाधीयते।

पुराणेषु अतिशयोक्तिपूर्णा शैली समादृता येन लोकास्तानि अविश्वसनीयानि काल्पनिकानि च प्रतियन्ति स्म। तत्र बोद्धव्यमिदं यत् त्रिधा वर्णनं क्रियते—

वस्तुतत्त्वकथारूपेण, रूपकद्वारा, अतिशयोक्तिद्वारा च। वस्तुतत्त्वकथा वैज्ञानिकानाम्, ते हि वस्तु यथावद् वर्णयन्ति, न किमपि रञ्जनं तत्रावरन्ति। रूपकद्वारा वस्तुकथनप्रणाली वेदेषु व्यवह्रियते, तत्र हि उषः सुन्दरी कृता, वृत्रश्च राजाकृतः। अतिशयोक्तिप्रणाली पुराणेष्वादृता। अस्यां प्रणाल्यां वर्णिता अर्था यथामति विविच्य ग्रहीतव्या भवन्ति। पुराणानां तुलनात्मकमध्ययनं तदन्तस्तले प्रवेशनं च यदि क्रियेत तदा तत्रत्य इतिहासभागः सामाजिकवर्णनारहस्यं च स्पष्टमवभासेत इति विदुषां विचारः।

पुराणलक्षणम्

पुराणं पुरातनमाख्यानमुच्यते। संस्कृते पुराणशब्दश्चिरन्तनपर्यायः पुराणेषु भूता वर्त्तमाना भाविनश्चार्था वर्ण्यन्ते। इतिहासे तु भूता एवार्थ वर्ण्यन्त इति पुराणेतिहासयोरन्तरम्। प्राचीनास्तु पुराणमपीतिहासशब्देनाभि दधते। पुराणेषु पुराणलक्षणमित्थमुक्तम्—

'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥'

सर्गः सृष्टिः, प्रतिसर्गः सृष्टेर्लयः पुनश्च सृष्टिः, वंशः सृष्ट्यादौ वंशावली, मन्व न्तराणि के के मनवः कदा कदा अजायन्तेति वर्णनानि, वंशानुचरितं सूर्यचन्द्र वंशयोर्विशिष्य वर्णनम्, इदं वस्तुपञ्चकं पुराणेष्वपेक्ष्यते।

वस्तुतस्तु नैतान्येव वस्तूनि पुराणेषु वर्ण्यन्ते। इदन्तु न्यूनतमं वर्णनीयम् पुराणेष्वितोऽधिकान्यपि तानि तानि वस्तूनि वर्ण्यन्ते। उदाहरणार्थमग्निपुराणमेव गृह्यताम्। तत्र हि सर्वाण्यपि ज्ञातव्यवस्तूनि वर्णितानि, येन तत् भारतीय ज्ञानकोषः' इत्यभिधीयते।

कस्यापि मानवसमाजस्य इतिहासस्तावन्न पूर्णो मन्यते, यावत्तस्य सृष्टे प्रारम्भकालत इतिहासो न प्रस्तूयते। पाश्चात्यशिक्षाप्रभाविता विद्वांसो नैतदे नुमोदयन्ति स्म, अत एव ते पुराणानि सत्यानि न स्वीकुर्वन्ति स्म, परं सम्प्रति दृष्टिकोणपरिवर्तनं जातम्। एच्. जी. वेल्स महोदयः "आउटलाइन ऑफ द हिस्ट्री" नामके स्वग्रन्थे पौराणिकीं प्रणालीमनुसृतवान्। अनया सुसंस्कृतया दृष्टया भारतीयमितिहासं जिज्ञासमानानां कृते पुराणानि निधय इव।